ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

भगवानदास मोरवाल के काला पहाड़ नामक उपन्यास में सामाजिक संवेदना

मिस्टर मिनेश रामनाथ सातपुते

शोधार्थी, एसएमबीएसटी, कला, विज्ञान और वाणिज्य कॉलेज, संगमनेर

सारांश

समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भगवानदास मोरवाल का कथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान हैं। वर्तमान संदर्भों को समझने में पाठकों को उनका कथा साहित्य बहुत मदद करता है। उन्हें कथा साहित्य ने स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान हुए बदलावों,समस्याओं और सामाजिक विघटनों को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। भगवानदास मोरवाल को हिंदी साहित्य के बहुआयामी लेखक माना जाता है। उनकी लेखन कला ने उपन्यास,कहानी,संस्मरण आदि विभिन्न विधाओं में अपना प्रभाव दिखाया है। उसने अपने लेखन में कई उपेक्षित संदर्भों को विषय बनाया है। उनके लेखन ने स्थानीय जीवन और वातावरण को जीवंत कर दिया है। लेखन के माध्यम से उन्होंने दलितों और वंचितों की मूल संवेदनाओं को उजागर किया है। काला पहाड़ नामक उपन्यास में उनके विचार मेव समाज की लोक संस्कृति,जीवन,शिक्षा प्रणाली,सांप्रदायिकता और सामाजिक व्यवस्था पर था। भगवानदास मोरवाल की प्रतिनिधि कहानियाँ समाज में समानता और अस्मिता के लिए संघर्ष के बारे में बताती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से भगवानदास मोरवाल के काला पहाड़ नामक उपन्यास में सामाजिक संवेदना का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्यबिन्दु- भगवानदास मोरावल,कथा साहित्य,उपन्यास,साहित्यिक कृतियाँ

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

प्रस्तावना

भगवानदास मोरवाल हिंदी कथा साहित्य के ऐसे लेखक हैं जो हमेशा जटिल और संवेदनापूर्वक मुद्दों को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाते हैं। उन्होंने उपन्यास की कहानी को दोहराने के बजाय पुस्तक के कई घटकों का आलोचनात्मक ढंग से पता लगाने की कोशिश की है। आज हिंदी आलोचना में काफी हद तक ऐसा ही लेखन हो रहा है। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में एक उभरते हुए लेखक भगवानदास मोरावल है, जिन्होंने अपनी रचनाओं में समाज और संस्कृति को बहुत सशक्त रूप से व्यक्त किया है।[1]उनका जन्म एक मजदूर परिवार में हुआ था जो हरियाणा के बहुत पिछड़े और दुर्लभ क्षेत्र में रहता था। उनके पिता मंगतूराम और माता कलावती थे। मोरावाल ही अपने परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाए। भगवानदास मोरवाल ने कठिन परिस्थितियों और अभावों का सामना करते हुए स्नातक की उपाधि प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में उन्हें एक मजदूर परिवार के बच्चे की तरह सभी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इनके ऊपर अधिक जिम्मेदारियां थीं क्योंकि वे बालकाल में विवाह कर चुके थे। वह एक पारिवारिक व्यक्ति है,इसलिए वह बहुत संयम से अपने परिवार की सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन किया है। लेखक ने हमेशा एक प्रेमपूर्ण और सहयोगी परिवार में जीवन बिताया है, इसलिए उनका लेखन पारिवारिक जीवन का एक बेहतर उदाहरण के रुप में है। भगवानदास मोरवाल के लेखन को समाजिक मुद्दों और परिस्थितियों से प्रेरित मानना सही होगा।[2]आठवें दशक के बाद प्रकाशित उनके लेखों में लेखनी की धार तेज हुई हैहालांकि उनके प्रारंभिक लेखों में शिल्पगत प्रारुप की अनगढ़ता थी। जो लेखक सहज अभिव्यक्ति,स्पष्ट विषयवस्तु और शैलीगत भाव से युक्त रहता है। मोरवाल की रचनाएँ आजएक लेखक के रूप में,उनके सामाजिक परिवेश और आत्मसंघर्ष से प्रेरित हैं। यह रचनाएँ उन्हीं के जीवनानुभवों का संग्रह हैं। यही कारण है कि मोरवाल की रचनाओं में मेवात ही दिखाई देती है। मोरवाल के लेखन का उद्देश्य मेवात के आदमी का

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

संघर्ष को व्यक्त करना है,जो यहाँ के आम लोगों की प्रातिनिधिक अभिव्यक्ति है। सच कहूँ तो मैं अपने लेखन को लोकविश्वासों और लोकसंघर्षों का प्रतिरोध और प्रतिरूप मानता हूँ।

भगवानदास मोरवाल द्वारा लिखित साहित्यिक कृतियाँ समकालीन साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कहानी समकालीन परिवेश को समझने में बहुत मदद करती है। लेखक की कहानी आजादी के बाद के दौर में हुए परिवर्तनों, चुनौतियों और सामाजिक विघटन का सजीव चित्रण प्रस्तुत करती है।[3]स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद,हमारे देश में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। इस घटनाक्रम का भारत के हर पहलू और क्षेत्र पर,घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर,सभी स्तरों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। परिवर्तन के इस युग के बीच,राष्ट्र ने औद्योगीकरण,विज्ञान,शिक्षा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़ती भागीदारी का अनुभव किया। परिणामस्वरूप,भारतीय समाज में बड़े पैमाने पर महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। औद्योगीकरण के कारण ग्रामीण-शहरी प्रवास हुआ,जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवारों से एकल परिवारों की ओर बदलाव आया। महिलाओं की शिक्षा की प्रगति ने उन्हें आत्मनिर्भर बनने और पुरुषों के बराबर काम करने के लिए सशक्त बनाया। इसके अतिरिक्तयुवा पीढ़ी में पैतृक व्यवसाय को अपनाने के प्रति रुझान बढ़ रहा है। भोजन और अन्य संसाधनों की लगातार कमी के परिणामस्वरूप सामाजिक और आर्थिक ढांचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इसके अलावा,राजनीति में भ्रष्टाचार,रिश्वतखोरी,अवसरवाद,भाई-भतीजावाद और क्षेत्रवाद की घुसपैठ ने गरीबी,अपराध, सांप्रदायिकता और जातिवाद जैसे सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को बढ़ा दिया हैजिससे वे देश में और अधिक खतरनाक हो गए हैं। भगवानदास मोरवाल ने अपनी काल्पनिक कृति में देश की बदली हुई स्थिति का कुशलतापूर्वक चित्रण किया है।[4]लेखक की किताबें और कहानियाँ भारत के अब तक वंचित क्षेत्रों पर प्रकाश डालती हैं जो अब तक अज्ञात रहे हैं। हम दूसरों की चिंताओं,परिवेश और संस्कृति से अनभिज्ञ थे। मोरवाल ने अपनी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से साहित्यिक

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

संवेदनाओं व यथार्थ स्वरुप की मानवीय प्रवृत्ति को संतुलित कर केन्द्र बिन्दु की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया है।

व्यक्ति ही समाज का निर्माता हैं। व्यक्ति समाज की सबसे बुनियादी और मौलिक इकाई है। एक व्यक्ति परिवार के निर्माण में योगदान देता है और परिवारों की सामूहिक उपस्थिति समाज को आकार देती है। सभ्यता का विकास और उसके प्रयास प्रत्येक साहित्यिक विधा में प्रतिबिंबित हुए हैं। साहित्य सभ्यता के कई पहलुओं को समाहित करता है। साहित्य को समाज का प्रतिबिंब कहा जाता है क्योंकि यह एक निश्चित राष्ट्र की सामाजिक गतिशीलता और वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करता है। लेखक की रचनाएँ उसके परिवेश,व्यक्तिगत जीवन और समाज से प्रेरित होती हैं। भगवानदास मोरवाल स्वीकार करते हैं कि एक लेखक के अनुभव उसके सामाजिक परिवेश,आर्थिक स्थिति, जाति और आदर्शों से प्रभावित होते हैं। भगवानदास मोरवाल की रचनाएँ इन सभी कारकों का प्रभाव प्रदर्शित करती हैं। लेखक ने पर्यावरण और समाज के संदर्भ में जीवन जीने के नवीन दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। भगवानदास मोरवाल की रचनाओं में तुरंत ही सामाजिक जागरूकता का सकारात्मक चित्रण दिखता है।[5]इनके लेखन,जैसे काला पहाड़,बबल तेरा देस में, हलाला,रेत,वंचना, शकुंतिका और अन्य औपन्यासिक कृतियाँ है। जिसमें से कुछ का उद्देश्य मोवाती जीवन के लगभग हर पहलू को शामिल करना है। मोरवाल के कार्यों को सीधे तौर पर उस सभ्यता द्वारा आकार दिया गया है जिसे वह अपनी सभ्यता के रूप में संदर्भित करते हैं। उन्होंने अपनी कलात्मक रचनाओं के माध्यम से अपनी पारिवारिक स्थिति,परिवेश,घटनाओं,स्थितियों और मुद्दों के प्रभाव को अपनी सोच पर व्यक्त किया है।

काला पहाड़ उपन्यास की कथावस्तु

सन् 1999 में 'काला पहाड़' नाम उपन्यास का लेखन हुआ जिसमें हरियाणा के मेवात क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया गया था। काला पहाड़ की कथा भगवानदास मोरवाल की व्यक्तिगत

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

विचारों की शैलीगत प्रसतुती है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित घटनाओं को लेखक न केवल एक दर्शक के रूप में देखता है,बल्कि लेखक ने स्वयं उन घटनाओं की वास्तविकता का व्यक्तिगत अनुभव किया है। उपन्यास की कथा सामूहिक संस्कृति के भीतर सामुदायिक तनाव के परिणामस्वरूप होने वाले विघटन पर संरचित है। कहानी मेवात क्षेत्र पर आधारित है। मेवात का निवासी मेव समाज के होते है जिसने इस्लामी आस्था अपना ली है।[6]यह कहानी धार्मिक और सांप्रदायिक परिवर्तन के दौर में वर्तमान युवा पीढ़ी की पहचान की तलाश को दर्शाती है,साथ ही पुरानी और युवा पीढ़ी के बीच वैचारिक विभाजन को भी उजागर करती है। उपन्यास की कथा से पता चलता है कि राजनीतिक ठेकेदारों,प्रशासन और पुलिस द्वारा आम जनता का शोषण अंततः हिंदुओं और मुसलमानों के मध्य बढ़ती भेदभाव सम्बन्धी दुर्भावना को जन्म देता है। आपसी विश्वास का आधार विघटित हो जाता है। मेवात में पहले के शांत और आपसी सहयोग सम्बन्धी परिवेश में बेचैनी और चिंता का माहौल प्रसारित होने लगता है। मोरवाल जी ने काला पहाड़ नामक उपन्यास से सम्बन्धित कई स्थानों पर ऐतिहासिक वास्तविकता का स्वरुप प्रस्तुत करते हुए कहा है कि मेवात अब परेशानियों का सामना कर रहा है,खासकर बिगड़ते आपसी सौहार्द के मामले में और नैतिक स्तर पर इस बोझ को कोई भी नहीं उठा सकता है। लेखक ने समकालीन परिवेश में मेवाती समूह की विकसित होती जीवनशैली और सांस्कृतिक विरासत को चित्रित करने के लिए एक सम्मोहक काल्पनिक क्षेत्र बनाया है। भारत का विकास ज्यादातर धार्मिक कारकों पर आधारित है लेकिन वर्तमान राजनीतिक और धार्मिक शक्तियाँ आम जनता की मानसिकता को प्रभावी करने का प्रयास कर रही हैं। इस रचना में मोरवाल जी का उद्देश्य यह बताना है कि ये शक्तियां अपना प्रभाव स्थापित करने हेतु तमाम कोशिशों के बावजूद मेवात में रहने वाले भारतीयों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगी। भारतीय एकता को आसानी से इन शक्तियों के आगे नहीं झुकना चाहिए। यह उपन्यास भारतीय सभ्यता की लचीली मानसिकता पर प्रकाश डालती है और अंतरधार्मिक संबंधों की जटिलताओं को उजागर करती है। यह एक

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

स्थापित वास्तविकता है कि मानव समाज के पास धार्मिक कट्टरवाद की व्यापक समझ नहीं हो सकती है लेकिन वह धर्म की आड़ में आसानी से इकट्ठा होकर हमले शुरू कर देता है। सामाजिक उत्थान और विकास में बाधा निस्संदेह बहुसंख्यक हिंदुओं और अल्पसंख्यक मुसलमानों द्वारा दिखाई गई आक्रामकता के कारण होती है। सलेमी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा देने का प्रयास करता है,हालांकि अफसोस की बात है कि वह अंततः अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से चूक जाता है।

लेखक ने समकालीन परिवेश में मेवाती समूह की विकसित होती जीवनशैली और सांस्कृतिक विरासत को चित्रित करने के लिए एक सम्मोहक कथा क्षेत्र तैयार किया है। भारत की प्रगति का मूल आधार धार्मिक सद्भावना है। मेवात में ग्रामीण जीवन के सभी पहलुओं की खोज करते हुए,यह उपन्यास खांटी मेवात की कहानी बताती है, एक ऐसी जगह जहां लोकतंत्र का व्यावहारिक महत्व बहुत कम है।[7]चुनावी माहौल की सरगर्मी के बीच मेवात प्रदेश भारत के अन्य राज्यों जैसा दिखता है, हालाँकि जब स्थानीय लोक संस्कृति और एकता की बात आती है,तो मेवात देश के बाकी हिस्सों से अलग दिखता है। मेवात का इतिहास निकटता और आपसी सौहार्द की स्थायी उपस्थिति का प्रमाण देता है,जो इस क्षेत्र में कभी बाधित नहीं हुआ है। हसन खान मेवाती और गांधी दोनों ने मेवातियों के सौहार्दपूर्ण स्वभाव की प्रशंसा की है। हसन खान मेवाती एक ऐतिहासिक व्यक्ति ने अपने समुदाय और भाई-बहनों को बचाने के लिए मुगल सम्राट बाबर,जो एक बाहरी व्यक्ति था उसका समर्थन करने से परहेज करके निस्वार्थता का प्रदर्शन किया। जब गांधी संघर्षरत आन्दोलन कर रहे थे,तो उनका उद्देश्य भारत के विभाजन के बाद मेवातियों को पाकिस्तान जाने से रोकना था। यह कहानी सांस्कृतिक और सामाजिक संघर्ष के बीच मेवाती लोगों के जीवन का विस्तृत चित्रण प्रदान करती है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

काला पहाड़ में अभिव्यक्त समाज

वर्तमान में हमारा देश सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक उथल-पुथल का सामना कर रहा है। जहां कुछ राजनीतिक समूह जातिवाद का प्रचार करते हैं,वहीं धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ घृणित और नृशंस अत्याचार भी किए जाते हैं। इस चिंता-उत्प्रेरण परिस्थिति के बीच भगवानदास मोरवाल का उपन्यास काला पहाड़ राहत प्रदान करती है,हमें आश्वस्त करती है कि अभी भी आशा की किरण बाकी है। प्रकाश मानव आँख के लिए बोधगम्य है। इस संस्कृति के भीतर,ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास प्रगतिशील चेतना है और इन प्रचलित प्रवृत्तियों का मुकाबला करने का साहस है। हरियाणा का मेवात क्षेत्र इस कहानी के लिए परिवेश और कार्यस्थल के रूप में कार्य करता है। यह कार्य मेवात के भौगोलिक और सांस्कृतिक सार को चित्रित करता है,साथ ही भारतीय जीवन का एक ज्वलंत और भावनात्मक रूप से प्रभावशाली प्रतिनिधित्व भी करता है।[8]इस संदर्भ में हिंदू और मुस्लिम व्यक्तियों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं है। स्थानीय समुदायों में धार्मिक और जाति-आधारित पूर्वाग्रह का अभाव है। यहां के निवासियों में गहरा स्नेह और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व है। प्रस्तुत उपन्यास में काला पहाड़ से घिरे एक ग्रामीण क्षेत्र की कहानी को दर्शाया गया है, जैसा कि मुस्लिम मेव सलेमी ने देखा था। सलेमी,जिसने कभी सामंजस्यपूर्ण अतीत नहीं देखा या अनुभव नहीं किया है। असहिष्णुता के वर्तमान परिवेश की गहराई से प्रभावित है,जो उसे बहुत परेशान करता है। कुछ स्थानों पर रथ यात्रा और कुछ अन्य स्थानों पर ध्वस्त बाबरी मस्जिद के कारण साझा संस्कृति पर हमला हुआ जिसके कारण जो लोग पहले भाई-भाई लगते थे। वे शत्रुता के गुटों में विभाजित हो गए। एक ओर सांप्रदायिक दंगों के अत्याचारों को देखना मन को परेशान करता है। वहीं दूसरी ओर सांप्रदायिक सद्भाव के उदाहरणों का सामना करने से यह आश्वासन मिलता है कि सांप्रदायिक माहौल में अभी भी आशा की किरण और शांति की भावना है। समाज में ऐसे लोग हैं जो सामाजिक शांति बनाए रखने के लिए हर आवश्यक कार्रवाई करने को तैयार हैं।[9]लेखक ने अपने काम में सलेमी जैसे

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

व्यक्तियों का जो चित्रण किया है उसका उद्देश्य हमारे वर्तमान राजनीतिक युग को सांस्कृतिक या मूल्य-आधारित युग में बदलना है। यह उपन्यास एक संदेश देने के माध्यम के रूप में कार्य करती है,जिसका उद्देश्य किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह को समाप्त करके सामाजिक एकजुटता को बनाए रखना है।

मेव समाज का चित्रण परिचय

मेवात हरियाणा,राजस्थान और उत्तर प्रदेश के चैराहे पर स्थित एक विशिष्ट क्षेत्र है। विद्वानों के अनुसार यहां रहने वाली 'मेव' जाति के नाम पर इस स्थान को 'मेवात' कहा गया। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. कृपाल चंद्र यादव ने प्रस्तावित किया है कि 'मेवात' नाम की उत्पत्तिमत्स्य प्रदेश से हुई होगी। उनका मानना है कि प्राचीन काल,बौद्ध काल और उसके बाद भी,वर्तमान में 'मेवात' के नाम से जाना जाने वाला पूरा क्षेत्र मत्स्य प्रदेश के नाम से जाना जाता था। अब यह सिद्ध हो चुका है कि 'मेवात'शब्द की उत्पत्ति मत्स्य शब्द से हुई है। भगवानदास मोरवाल के उपन्यास मेवात की संस्कृति,समाज और राजनीति की व्यापक समझ प्रदान करते हैं। मेवात मेवों के साथ एक समृद्ध सांस्कृतिक क्षेत्र है,जो इस्लाम का पालन करते हैं और मुस्लिम बनने से पहले उनकी गहरी अंतर्निहित पहचान है। रीति-रिवाजों और सामाजिक आचरण का अनुमान लगाना कठिन है,जहां वे खुद को यदुवंशी और सूरजवंशी कहते हैं। मेव मुस्लिम समुदाय का एक जातीय समुदाय है,जिसे मेवाती भी कहा जाता है,जो हरियाणा के मेवात जिले और राजस्थान के अलवर और भरतपुर जिलों में रहता है। वे कई दशकों से इस क्षेत्र में रह रहे हैं और मूल रूप से उत्तर-पश्चिमी भारत,विशेष रूप से मेवात और पाकिस्तान के आसपास रहते थे। वे मेवाती भाषा बोलते हैं और विभिन्न पाकिस्तानी शहरों में उनकी अच्छी आबादी है।[10]मेव शब्द की उत्पत्ति मेदेस जनजाति से हुई है,जो प्रकृति-पूजक आर्यों का एक समूह है जो मध्य एशिया से अफगानिस्तान और सिंध के रास्ते भारत पहुंचे। मेव राजा नाहर खान मेवाती के वंशज थे,जो चैदहवीं सदी में मेवात

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

के वली थे और उन्होंने पन्द्रहवीं सदी में अलवर किले का पुनर्निर्माण कराया था। मेव इस्लाम को मानते हैं और लगभग कुछ वर्षों से इसका पालन कर रहे हैं। वे सभी धर्मों का सम्मान करते हैं और अपने त्योहारों को अपने धर्म के अनुसार मनाते हैं। मेव लोग ईद उल फितर और ईद उल अजहा के अलावा किसी भी धर्म का त्योहार नहीं मनाते हैं। मेवात में सभी मुसलमान सुन्नी हैं। मेव का इतिहास मेड्स जनजाति से उनके संबंध से चिह्नित है,जो मूल रूप से मध्य एशिया से थे और बाद में राजपूत संघ में शामिल हो गए।

मेव समाज में परिवारिक वातावरण

मेव,भारत का एक क्षेत्र,मुस्लिम धर्म का पालन करता है और जिसकी अपनी एक अनूठी परंपरा है। जिसका रूपांतरण काफी उत्साहवर्धक रुप में परिवारिक वातावरण में मनाया जाता है। इस क्षेत्र में ग्वालबालों के लिए गौरैया का घोंसला रखना,अपशकुन देखना और बुधवार व शनिवार को नया काम शुरू करना जैसी लोक मान्यताएं भी हैं। कृषि और पशुपालन मुख्य व्यवसाय हैं,अधिकांश सूखे मेवों की आबादी गाँवों में रहती है। कुछ शिक्षित लोगों के शहरों में बसने के बावजूद,मेव लोग सरल,शांतिपूर्ण और मौज-मस्ती से भरा ग्रामीण जीवन यापन करते हैं। मेव पुरुष कुर्ता-धोती,पगड़ी और सहरी पहनते थे,जबकि महिलाएं रंग-बिरंगी राजस्थानी शैली की कढ़ाई वाली अंगिया,कुर्ती,घाघड़ी,जोली,जामखी,लहासी और गदका पहनती थीं। कामिल-तहमद और दुष्ट-तहमद ने उनकी जगह ले ली है,जबकि शिक्षित युवा अब पैंट-बुशर्ट या कुर्ता-पायजामा पहनते हैं। क्षेत्र की महिलाएं आभूषण पहनने की शौकीन हैं,जिनमें सोने के आभूषण हंसली,बनकड़े,हार,छन,पचेली,नेवारी,बाला,गढ़िता,हाथफूल,हमेल,झुमका,बाली,बटन और अंगूठी,चांदी,गुलिबंद,कुंडल,चूड़ी और अंगूठी,आदि शामिल हैं। विवाह समारोहों या मेलों के दौरान मेव युवा अपनी आंखों में स्याही या सुरमा और बालों में तेल लगाते हैं।[11]वे एक तकिया नीचे बांधते हैं और अपनी सामने की जेब में एक दर्पण और रूमाल रखते हैं जिसे स्थानीय भाषा में छैला (मनचला) कहा जाता है। सूखे मेवे और अन्य जातियों का मुख्य

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

भोजन घी,दूध,दही,मांस और रोटी है,जिनमें मांस मुख्य उपभोग है। मेवात के भोजन में महेरी (राबड़ी) प्रसिद्ध है,जो जो और छाछ,बाजरा और जौ के आटे से बनाई जाती है।

मेवात क्षेत्र में अक्सर व्यवस्थित विवाह होते हैं,जिसमें दुल्हन पक्ष छोरा देखा के माध्यम से दूल्हे की तलाश करता है। शादी की तारीख आमतौर पर एक या दो महीने पहले तय की जाती है,और दूल्हे पक्ष पूरे समुदाय के लिए एक पार्टी का आयोजन करता है,जिसे बया आना कहा जाता है। कुछ दिनों के बाद,पूरे समुदाय के सामने श्लगानश् पढ़ा जाता है और पार्टियां शादी की तैयारी शुरू कर देती हैं। मेवात क्षेत्र आतिथ्य सत्कार को बहुत महत्व देता है,मेहमानों के प्रति बहुत सम्मान और उदारता दिखाता है। एक मेव महिला एक लोक गीत के माध्यम से इसका उदाहरण प्रस्तुत करती है।

चावल रांधू उजला,घुपवां घोंटू दा ल।

मीठो ले मनमावतों,दूँ छुटवां घी डाल।।[12]

मेवात क्षेत्र में मेव महिलाएं अपने ससुराल में बेटे के जन्म पर छठी की रात को घी,बूरा और चावल की दावत और गुड़ और चना बांटकर जश्न मनाती हैं। इनमें मेव महिलाओं के नाम सरल होते हैं,जैसे अंगूरी,अमीरी,मोहम्मदी,करीमी,लिचना और दखान इत्यादि। इस क्षेत्र में रहने वाले मेव समाज के लोग पारम्परिक तौर पर पारिवारिक परिवेश में अपनी एक अनूठी परम्परा व संस्कृति का समावेश प्रस्तुत करते है।

भगवानदास मोरवाल एक साहित्यकार के रुप में

वर्तमान समय में,भगवानदास मोरवाल हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध लेखक के रुप में उभरे हैं। उनका व्यक्तित्व सादगी, सहजता, विनम्रता और जीवंत भावना से परिपूर्ण है। वह अन्य लेखकों की तरह खुद को असाधारण दिखने के लिए जानकारी छुपाने का काम नहीं करते थे। उनका जीवन पारदर्शी और सरलता से समझ में आने वाला है। इनकी परवरिश के दौरान, साहित्यिक अनुभव की कमी थी और किताबों के प्रति सीमित सराहना थी। इन्होंने

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

प्रेमचंद्र और जैनेंद्र द्वारा लिखित विभिन्न साहित्यिक कृतियों का अध्ययन किया है। उनकी विशेषज्ञता,धारणा और रचनात्मकता एक समान हैं।[13]उनके पास व्यापक विशेषज्ञता है जो निरंतर बढ़ती जा रही है। भगवानदास मोरवाल के लिए लिखना केवल एक लेखन नहीं है, बल्कि एक प्रकार की तपस्या है। लेखन शैली उनके लिए एक श्रमसाध्य कार्य और एक केंद्रित प्रयास दोनों है। अपने लेखन के संबंध में,उनका दावा है कि उनके लेखन के संबंध में पाठक को धोखा देने की चालाकी लंबे समय तक टिकाऊ नहीं है। अपनी ईमानदारी और समर्पण के परिणामस्वरूप उन्होंने अपने लेखन और आविष्कारों के माध्यम से हिंदी साहित्य में अपने लिए एक विशिष्ट जगह बनाई है। इन्होंने अपने द्वारा लिखित उपन्यासों में साहित्य की सूक्ष्म मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करने में यथार्थ जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है।

उपन्यास

उपन्यास के क्षेत्र में भगवानदास मोरवाल ने अब तक कुल पांच उपन्यास लिखकर किताबों के क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाई है। मोरवाल के कार्यों में ग्रामीण और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को दर्शाया गया है। इसके अलावा, मेवात का निवासी होने के नाते,जो कि ज्यादातर मुसलमानों द्वारा बसा हुआ क्षेत्र है,मोरवाल ने अपनी पुस्तकों में मुस्लिम परिवारों की मार्मिक कथाओं को भी चित्रित किया है। एक लेखक के रूप में मोरवाल की पहचान मेवात से गहराई से जुड़ी हुई है। वह मेवाती समाज और संस्कृति के अध्ययन में विशेषज्ञता रखने वाले लेखक हैं।[14]लेखक का लेखन जीवन का एक जीवंत चित्रण प्रदान करता है,उसके सार से सम्बन्धित है लेकिन किसी भी भावनात्मक पूर्वाग्रह से अलग रहता है। मोरवाल की रचनाएँ विश्वसनीय कहानी कहने की तकनीकों का उपयोग करते हुए आजादी से पहले से लेकर आज तक भारतीय संस्कृति में मौजूद असमानताओं और सांस्कृतिक विविधताओं को प्रभावी ढंग से चित्रित करती हैं। लेखक की रचनाएँ धैर्य और बुद्धिमत्ता का सामूहिक प्रदर्शन प्रदान करती हैं। भगवानदास मोरवाल द्वारा औपन्यासिक कृतियाँ जिसमें काला पहाड़,बाबल तेरा देस में,रेत,हलाला,नरक मसीहा,शकुंतिका इत्यादि मुख्य रुप से है।

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

उद्देश्य

- भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्व जीवन का परिचय कराना।
- भगवान दास मोरवाल के साहित्यिक एवं सामाजिक दायित्व से परिचित कराना
- मेव समाज की सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति का विशेष अध्ययन कराना

अनुसंधान पध्दति

इस वर्तमान अध्ययन में,वर्णनात्मक अनुसंधान वह दृष्टिकोण था जिसे लागू किया गया था। सूचना एकत्र करने में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाता है। द्वितीयक डेटा में पुस्तकों,लेखों,पत्रिकाओं,वेबसाइटों और विभिन्न प्रकार के जनसंचार माध्यमों जैसे व्यापक स्रोतों से प्राप्त सामग्री शामिल होती है। अनुसंधान कार्य के आरंभ में भगवानदास मोरवाल के साहित्य का पठन पाठन किया गया। समाजशास्त्रीय विश्वकोश एवं पत्र पत्रिकाओं की सहायता ली गयी है। सामग्री संकलन में आधार ग्रन्थ तथा जितने उपलब्ध हो सके उन संदर्भ ग्रन्थों का आश्रय लिया गया है। पर्याप्त चिंतन मनन करने के उपरान्त संकलित सामग्री का वर्गीकरण करने के पश्चात् मेरे लिए शोध का लेखन करना एक चुनौती भरा कार्य था।

कथा साहित्य के क्षेत्र में भगवानदास मोरवाल ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देते हुए कई कहानियों,उपन्यासों,कृतियों का लेखन किया है। मोरवाल जी की कहानियों में सिला हुआ आदमी,सूर्यास्त से पहले,अस्सी माडल उर्फ सूबेदार,लक्ष्मण रेखा इत्यादि मुख्य रुप से संग्रहित है। हिन्दी कथा साहित्य में इनके उपन्यास काला पहाड़,रेत,हलाला,नरक का मसीहा इत्यादि सूक्ष्म मानवीय संवेदनाओं पर आधारित सामाजिक यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत करता है। लेखक के कहानी संग्रह का उद्देश्य समाज के साथ उनके गहरे संबंध को उजागर करना है और कथा ढांचे के भीतर जीवन की समकालीन चुनौतियों को चित्रित करना है। ये कहानियाँ मानवता के सामने आने वाले मुद्दों पर विचारोत्तेजक पूछताछ का काम करती हैं। मोरवाल की कहानियाँ कथात्मक विविधता,आम लोगों के संघर्ष और शोषण का चित्रण और

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

मनोवैज्ञानिक परिदृश्य की परिकल्पना जैसी विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं।मोरवाल का यह संकलन कथा कला के क्षेत्र में किसी समसामयिक प्रयोग की सुविधा नहीं देता। अपने आख्यानों के माध्यम से,उन्होंने स्थानीय लोकाचार की विशिष्ट विशेषताओं और मेवात संस्कृति से सम्बन्धित धार्मिक प्रथाओं को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। इन्होंने कहानी को जीवंत और सकारात्मक गुणवत्ता से समावेशित करने का कार्य किया है। मोरवाल ने कथा साहित्य की पृष्ठभूमि में सामाजिक जटिलता,स्वार्थ और धार्मिक असंतोष के परिवेश जैसे विषयों को शामिल करके एक साहित्यकार के रूप में अपनी नागरिक जिम्मेदारियों को पूरा किया है। मोरवाल जी के लेखन ने भारतीय सभ्यता की लचीली मानसिकता को उजागर करते हुए कई धार्मिक गतिशीलता की जटिलताओं को स्पष्ट किया है। उन्होंने अपने कार्यों में सामाजिक,आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए बहुत ही मार्मिक रूप व्यक्त करने का प्रयास किया है। अंतर्निहित मानवीय विशेषताओं वाले व्यक्तियों के लिए सामाजिक व्यवहार के सकारात्मक और नकारात्मक तत्वों को स्पष्ट करना है। मोरवाल अपने समुदाय के भीतर एक लेखक के रूप में पहचान रखते हैं,और उनका रचनात्मक कार्य किसी भी प्रमुख राजनीतिक रुख या गुटबाजी से अप्रभावित रहता है।अतःमोरवाल ने अपनी साहित्यिक कृतियों में अपने विशिष्ट स्थान की वास्तविकता का बखूबी चित्रण किया है। मोरवाल की साहित्यिक कृतियाँ,जो ग्रामीण सामाजिक जीवन को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं,उनके लेखन की पहचान हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत भगवानदास मोरवाल के कथा साहित्य कृतियों की व्यापाकता एवं संवेदना को समझने का प्रयास किया जाता है। इसमें मेव समाज की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को समझने के साथ ही काला पहाड़ नामक उपन्यास में आर्थिक संवेदना का यथार्थ स्वरुप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। ऐतिहासिक,राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों ने आज की भारतीय समाज व्यवस्था पर प्रभाव डाला है। आधुनिक

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

साहित्यकार भगवानदास मोरवाल ने ग्रामीण जीवन को चित्रित किया,जो साहित्यिक संवेदना का मूल स्वरुप है। उनके साहित्य में सामाजिक मुद्दे बहुत महत्वपूर्ण हैं। भगवानदास मोरवाल का साहित्य समकालीन सामाजिक परिस्थितियों का प्रतिबिंब है। वर्तमान समाज व्यवस्था में शोषित और उपेक्षित समाज हाशिये पर है। इस समाज में विकास के साधनों और अवसरों का अभाव है। भारत जैसे विकसित देश में हशिये की स्थिति में जीवन यापन करने वाले समाज को समझना एक बड़ी चुनौति है। मेव समाज की पारम्परिक परिवेश को काला पहाड़ नामक उपन्यास में यथार्थ रुप में मोरवाल जी ने अपने विचारों के माध्यम से व्यक्त किया है। मोरवाल की रचनाएं,आधुनिक कथाकारों के साथ,धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण को साहित्य जगत में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. शिवाजी नाले,रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्रामीण जीव,पृष्ठ 59
2. डॉ. शिवाजी नाले,रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्रामीण जीव,पृष्ठ 68
3. भगवानदास मोरवाल,'बाबल तेरा देश में' पृष्ठ 441
4. भगवानदास मोरवाल,'बाबल तेरा देश में'पृष्ठ 492
5. नेहा गुप्ता,भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन,शब्द ब्रह्म,भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका,वाल्यूम4, ईशू7,2016
6. भगवानदास मोरवाल,काला पहाड़,राजकमल प्रकाशन,पृष्ट466, वर्ष 2004
7. सिद्दीक अहमद मेव,मेवाती संस्कृति,पृ . 127
8. सिद्दीक अहमद मेव,मेवाती संस्कृति,पृ . 132
9. सिद्दीक अहमद मेव,मेवाती संस्कृति,पृ . 134
10. सिद्दीक अहमद मेव,मेवाती संस्कृति,पृ . 138
11. सिद्दीक अहमद मेव,मेवाती संस्कृति,पृ . 142
12. सिद्दीक अहमद मेव,मेवाती संस्कृति,पृ . 81

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 08, 2022

13.डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता,लोकमन का सिरजनहार- भगवानदास मोरवाल,समीक्षा पब्लिकेशन,गाँधीनगर,दिल्ली।

14.डॉ. मधु खराटे,उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल,विद्या प्रकाशन,कानपुर